RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary 2021; 6(4):05-09
ISSN: 2455-3085 (Online)
https://doi.org/10.31305/rrijm.2021.v06.i04.002

Research Paper

Double Blind Peer Reviewed/Refereed Journal
https://www.rrjournals.com/

पन्ना नगर का ऐतिहासिक जल प्रबंधन (रियासतकालीन तालाबों के विशेष संदर्भ में)

*शैलेन्द्र शर्मा

शोधार्थी, इतिहास विभाग, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, (म.प्र.)

ABSTRACT

हीरों की नगरी के रूप में प्रसिद्ध पन्ना नगर बुंदेलखंड में पन्ना रियासत की राजधानी के रूप में एक महत्वपूर्ण शहर था। राजधानी नगर की जल संबंधी नियमित आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ–साथ पन्ना नगर के तालाब अकाल से निपटने के साधन के रूप में भी उपयोगी सिद्ध हुए हैं। पन्ना नगर के तालाबों के इतिहास एवं उनकी वर्तमान स्थिति का अध्ययन जल–संकट के दौर में अत्यंत प्रासंगिक है।

Keywords: *पन्ना के तालाब, धर्म सागर, जल प्रबंधन, पन्ना जल–संकट, लोकपाल सागर, बुंदेलखंड का जल–संकट*

Article Publication

Published Online: 15-Apr-2021

***Author's Correspondence**

शैलेन्द्र शर्मा

शोधार्थी, इतिहास विभाग, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, (म.प्र.)

✉ bobb86[at]gmail.com

© 2021The Authors. Published by *Research Review Journals*

This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

प्रस्तावना–

जल जीवन का अनिवार्य घटक है। विश्व की सभी प्राचीन सभ्यताएं नदियों के पास ही विकसित हुई है। समयांतर के साथ मनुष्य ने जब नदियों से दूर भी बसाव प्रारंभ किया, तो उसने जल प्राप्ति के अन्य स्रोतों को खोजना प्रारंभ किया एवं वर्षा जल के संग्रहण एवं प्रबंधन की तकनीक भी विकसित की ताकि पेयजल एवं कृषि तथा अन्य कार्य हेतु जल की उपलब्धता सुनिश्चित हो सके। इसी क्रम में जलाशयों का निर्माण हुआ। तालाब बुंदेलखंड में जल संचयन का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत रहें है। तालाब एक मानव निर्मित संरचना है जिसमे किसी गहरे क्षेत्र के किनारे बांध बनाकर जलागम क्षेत्र से बहकर आने वाले जल को एकत्रित कर लिया जाता है। इस एकत्रित जल का प्रयोग दैनिक आवश्यकताओं के लिए होता था। यदि तालाब ऊँचाई पर स्थित है तो ऐसी स्थिति में अपेक्षाकृत निम्न ऊँचाई पर स्थित क्षेत्रो की सिंचाई हेतु भी तालाब में संचयित जल का प्रयोग किया जाता था। बुंदेलखंड में वर्षा जल का संग्रहण जल उपलब्धता का सर्व प्रमुख साधन रहा है। चंदेल एवं बुंदेला राजवंशों के समय यहां बड़ी संख्या में तालाबों का निर्माण हुआ। इन्हीं पारंपरिक जल प्रबंधन तकनीक को पन्ना नगर में भी अपनाया गया।

अनुसंधान क्षेत्र का परिचय–

शोध का अध्ययन क्षेत्र पन्ना नगर है। पन्ना नगर पन्ना जिले के उत्तर पश्चिम दिशा में 24^0 43′ उत्तरी अक्षांश एवम् 80^0 11′ पूर्वी देशान्तर में विंध्याचल पर्वतमाला की पन्ना श्रृंखला में स्थित है। पन्ना श्रंखला सागर जिले के उत्तर से छतरपुर जिले के दक्षिणी भाग एवम् पन्ना जिले के केंद्रीय भाग से होते हुए सतना जिले में चित्रकूट पहाड़ियों से मिलती है। पन्ना शहर मदर टुंगा पहाड़ी एवम्

कछवा सेहा, मंडला सेहा जैसी घाटियों के मध्य बसा हुआ है।[1] पन्ना शहर प्रारम्भ में एक गोंड बस्ती था तथा बाद में 14वीं शताब्दी से 17वीं शताब्दी के मध्य तक रीवा के बघेल राजाओं के अधिकार में रहा। छत्रसाल के द्वारा विसं 1732(1675 ईस्वी) में पन्ना रियासत की स्थापना कर पन्ना को राजधानी घोषित किया।[2]

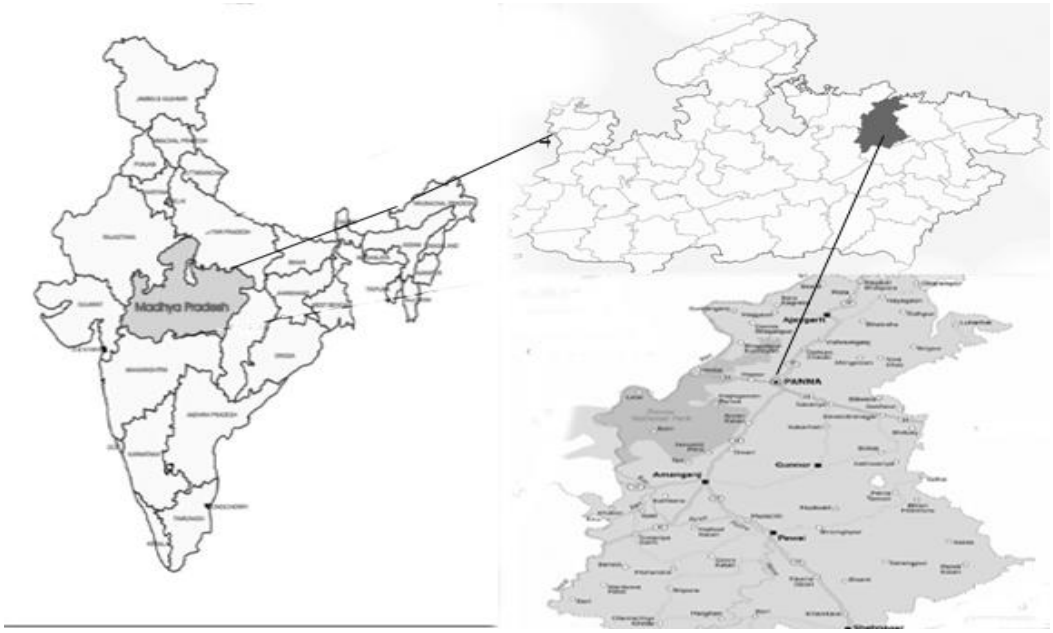

अनुसंधान क्रियाविधि–

प्रस्तुत शोध पत्र में पन्ना शहर की ऐतिहासिक जल प्रबंधन व्यवस्था के अध्ययन हेतु शहर के तालाबों का विस्तृत सर्वेक्षण तथा उपलब्ध साहित्यिक स्रोतों का विवेचन किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य–

पन्ना शहर की ऐतिहासिक जल प्रबंधन व्यवस्था का अध्ययन एवं जल संकट के सापेक्ष उनकी वर्तमान स्थिति का वर्णन इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य है।

रियासत की राजधानी के रूप में पन्ना बुंदेलखंड का एक महत्वपूर्ण नगर बन गया। इसके पश्चात् पन्ना में अन्य सुविधाओं के साथ ही जल सुविधाओं हेतु कार्य भी आरम्भ हुआ। पन्ना शहर में कोई बड़ी सदावाहिनी नदी नहीं है। पन्ना नगर से किलकिला नामक एक छोटी नदी गुजरती है जो कि पन्ना नगर की आवश्यकता पूरी करने में असमर्थ थी, साथ ही इसके जल के विषैले या प्रदूषित होने का भी उल्लेख मिलता है जिससे यह संकेत मिलता है कि किलकिला नदी स्वयं में पन्ना जैसे रियासत के राजधानी नगर की जल सम्बन्धी आवश्यकताओं का भार उठाने में असमर्थ थी। पन्ना के शासकों के पास बुंदेलखण्ड के चन्देल एवम् बुंदेला राजवंशों के द्वारा किये गए जल प्रबंधन की एक सुदृढ परम्परा मौजूद थी, इसी पर आगे चलकर पन्ना नगर में तालाबों के रूप में एक उत्कृष्ट जल प्रबंधन व्यवस्था ने जन्म लिया। पन्ना नगर के प्रमुख तालाब निम्नानुसार है–

लोकपाल सागर– लोकपाल सागर पन्ना नगर से पहाड़ीखेरा जाने वाले मार्ग पर स्थित है। पन्ना के राजा लोकपाल सिंह (1893–97 ई.) द्वारा इस तालाब का निर्माण 1896–97 में अकाल के समय कराया गया था।[3] यह तालाब एवं इससे संबंधित क्षेत्र वर्तमान में जल संसाधन विभाग को आरक्षित है जिसका संपूर्ण क्षेत्रफल 140.805 हेक्टेयर है तथा गहराई 20 मीटर है।[4] इस तालाब का प्रयोग निस्तारी तालाब के रूप में होता है, साथ ही इससे पन्ना नगर को जल प्रदाय भी किया जाता है। पन्ना जिले में नहर व्यवस्था का प्रथम उल्लेख भी लोकपाल सागर के संदर्भ में ही मिलता है। 'द पन्ना स्टेट एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट 1909–10' में लोकपाल सागर से नहर निकालने के प्रस्ताव का उल्लेख मिलता है, हालांकि यह नहर प्रणाली 1955–56 में पहली बार साकार हो सकी। लोकपाल सागर व गुनेर ताल से निकाली गई नहरें 1960–61 तक 1000 हेक्टेयर से अधिक भूमि की सिंचाई कर रही थी।[5]

लोकपाल सागर

दहलान तालाब– यह तालाब भी पन्ना नगर का रियासत कालीन तालाब है। यह तालाब राम तलैया के उत्तर तथा पथरिया तालाब के पूर्व दिशा में इंद्रपुरी इलाके में स्थित है। तालाब का क्षेत्रफल 7.336 हेक्टेयर है। इसकी गहराई 4 मीटर है।[6] तालाब का बंधान उत्तर–दक्षिण दिशा में है।

कमलाबाई का ताल– कमलाबाई का तालाब अजय गढ़ बाईपास मार्ग पर स्थित है। इस तालाब का क्षेत्रफल 15.540 हेक्टेयर है। इस तालाब में सूखी जमीन होने पर हीरे का खनन भी किया जाता है।

राम तलैया– राम तलैया बृजपुर–पहाड़ी खेरा मार्ग पर स्थित है। इस तालाब का क्षेत्रफल 1.315 हेक्टेयर है।[7] इसकी गहराई 2 मीटर है। इस तालाब में पक्के घाट बने हुए हैं।

मठया तालाब– इस तालाब का क्षेत्रफल 4.043 हेक्टेयर है।[8] मिटटी से बने इस तालाब में पत्थर के घाट बने हुए है। इसकी अधिकतम गहराई 3 मीटर है।

पथरिया तालाब– पथरिया तालाब पन्ना नगर के इंद्रपुरी इलाके में स्थित है। इस तालाब में पक्के घाट बने हुए हैं। इस तालाब का क्षेत्रफल 2.286 हेक्टेयर है।[9] इसकी गहराई लगभग 2 मीटर है।

महाराज सागर– यह तालाब पन्ना नगर के टिकुरिया इलाके में अजयगढ़ बाईपास सड़क के किनारे स्थित है। इस तालाब का क्षेत्रफल 2.323 हेक्टेयर है।[10] इस झील की गहराई 2.5 मीटर है। वर्तमान में यह तालाब वर्ष के अधिकांश समय जलहीन रहता है एवं गंदगी तथा सीवेज निष्कासन से अस्तित्वविहीन होता जा रहा है।

मिर्जा राजा की तलैया– यह तालाब मिर्जा राजा के मकबरे के पास स्थित है एवं उन्ही के नाम पर इसे मिर्जा राजा की तलैया के तौर पर जाना जाता है। इसका क्षेत्रफल 0.94 हेक्टेयर है। इस तालाब में पक्के घाट बने हुए है। यह एक निस्तारी तालाब है।

धर्म सागर– पन्ना नगर के पूर्वी किनारे पर मदार टुंगा पहाड़ी है जिसकी ऊंचाई लगभग 1557 फीट है। इसी पहाड़ी व आसपास के क्षेत्र से बह कर आने वाले पानी को पश्चिम तथा उत्तर दिशा में बांध बनाकर इकट्ठा करने से इस तालाब का निर्माण हुआ है। इस तालाब का निर्माण राजा सभा सिंह (1739–52 ई.) के द्वारा कराया गया था। सभा सिंह के पन्ना के राजा बनने के 5 साल पश्चात् भीषण अकाल पड़ा था। अकाल के समय किए गए राहत कार्य के दौरान इस तालाब का निर्माण कराया गया था।[11]

धर्म सागर का क्षेत्रफल 29.7 हेक्टेयर है। तालाब के मध्य में शिव मंदिर बना हुआ है। जनश्रुति के अनुसार वर्तमान मंदिर के स्थान पर धर्म कुंड नामक एक प्राकृतिक जलस्रोत था, अतः इस कुंड की पहचान हेतु ही उसी स्थान पर मंदिर का निर्माण कराया गया। धर्म सागर के संदर्भ में यह प्रचिलित धारणा है कि धर्म सागर से भूमिगत जल सुरंगों का निर्माण किया गया था जिन्हें आसपास के कुओं एवं अन्य तालाबों से जोड़ा गया था, जिससे धर्म सागर तालाब का पानी इन कुओं व अन्य जलाशयों में पहुंचता था।[12] फलस्वरुप इन सभी जल स्रोतों में भीषण गर्मी में भी जल स्तर ऊंचा रहता था। जनश्रुति को यदि संकेत स्वरूप भी ग्रहण किया जाए

तो यह स्पष्ट है कि धर्म सागर तालाब में जल भरा होने पर आसपास के क्षेत्रों में भूमिगत जल स्तर की पुनः पूर्ति होती रहती है तथा नगर क्षेत्र में अन्य जल स्रोतों का जल स्तर ऊंचा बना रहता है।

धर्म सागर

नृपति सागर/निर्पत सागर– पन्ना के राजा निर्पत सिंह (1849–70 ई.) के शासनकाल में पन्ना नगर में कुंजवन के पास इस तालाब का निर्माण कराया गया। यह तालाब लगभग 75 हेक्टेयर में विस्तारित है। इसकी गहराई 5 मीटर है। इसमें लगभग वर्ष भर पानी भरा रहता है तथा वर्तमान में पन्ना नगर को जल प्रदाय करने वाले तालाबों में सर्वप्रमुख है।[13]

बेनीसागर– बेनी हजूरी पन्ना के राजा हिंदुपत(1758–76 ई.) के कामदार थे। पन्ना राज्य में हिंदूपत की मृत्यु के पश्चात पन्ना राज्य में ग्रह युद्ध की शुरुआत हुई जिसमें बेनी हजूरी भी एक महत्वपूर्ण किरदार थे। यह तालाब पन्ना शहर के बस स्टैंड मार्ग पर स्थित है। पन्ना के राजा हिंदुपत के काल में 1764– 65 में बेनी हजूरी के नाम पर इस तालाब का निर्माण कराया गया। इस तालाब का क्षेत्रफल 9.227 हेक्टेयर है।[14] इस तालाब की अधिकतम गहराई 6 मीटर है। तालाब का बंधान उत्तर दक्षिण दिशा में है तथा तालाब में पानी का आगमन दक्षिण एवं पश्चिम दिशा से होता है। तालाब का अधिशेष जल पूर्व दिशा की ओर निष्काषित होता है। इस तालाब के पश्चिमी एवं उत्तरी तट पर पक्के घाट बने हुए है।[15]

पन्ना जिले की भौगोलिक संरचना तालाबों के निर्माण हेतु अधिक उपयुक्त नहीं थी। इस दृष्टि से वर्तमान पन्ना शहर के रियासत कालीन तालाब विशिष्ट हैं। पन्ना शहर की भूगर्भिक संरचना भी इस प्रकार की है कि 24 मीटर से अधिक गहराई पर जाने पर प्राकृतिक भूमिगत जलाशय का निर्मित हो पाना अत्यंत कठिन है।[16] अतः ट्यूबवेल एवं कुओं का एक सीमा से अधिक गहराई तक जाना व्यर्थ है।

निष्कर्ष.

पन्ना शहर आज बुंदेलखंड के अन्य क्षेत्रों की तरह ही जल संकट से गुजर रहा है। पन्ना क्षेत्र के तालाब जिन्होंने पिछले 300 वर्षों से पन्ना शहर को जल के संबंध में आत्मनिर्भर बनाए रखा। आज उनमें से ज्यादातर की दशा शोचनीय स्थिति में है लगभग सभी तालाबों के वाटर फीडिंग एरिया में पक्के निर्माण या अन्य कारणों से बाधाएं उपस्थित हैं। साथ ही ज्यादातर तालाबों के जल भराव क्षेत्र में सिल्ट की मात्रा बहुत बढ़ गई है, जिससे तालाबों की जलभरण क्षमता पर भी असर पड़ता है। तालाब न केवल जल स्त्रोत के रूप में महत्वपूर्ण होते हैं, बल्कि वे भूमिगत जल की पूर्ति का भी एक महत्वपूर्ण स्रोत है। इस दृष्टि से भी पन्ना शहर हेतु तालाबों का संरक्षण व उन्हें पुनः जल के सबसे महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में मान्यता देना व तदनुसार उनके संरक्षण हेतु कार्य करना अत्यंत प्रासंगिक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. सिन्हा,ए.एम.,म.प्र.डिस्ट्रिक्ट गजेटियर–पन्ना,डायरेक्टरेट ऑफ गजेटियरस,डिपार्टमेंट ऑफ कल्चर,गवर्नमेंट ऑफ म.प्र.,भोपाल, पृ॰ 4–5
2. तिवारी, गोरेलाल, बुंदेलखंड का संक्षिप्त इतिहास, इंडियन प्रेस लिमिटेड, अल्लाहाबाद, 1933, पृ॰ 153
3. त्रिपाठी, डॉ काशीप्रसाद, बुंदेलखंड का वृहद इतिहास (राजतंत्र से जनतंत्र), समय प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पृ॰ 141

4. पन्ना लैंडबैंक, आयुक्त भू–अभिलेख एवं बंदोबस्त, म.प्र., पटैरया, शिव अनुराग, बुन्देलखण्ड, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, पृ॰ 95
5. सिन्हा,ए.एम.,पूर्व उद्धत पृ॰ 114
6. पन्ना लैंडबैंक, पूर्व उद्धत पटैरया, शिव अनुराग, पूर्व उद्धत, पृ॰ 95
7. पन्ना लैंडबैंक, पूर्व उद्धत
8. पन्ना लैंडबैंक, पूर्व उद्धत
9. पन्ना लैंडबैंक, पूर्व उद्धत
10. पटैरया, शिव अनुराग, बुन्देलखण्ड, पूर्व उद्धत,
11. पटैरया, शिव अनुराग, बुन्देलखण्ड, पूर्व उद्धत, पृ॰ 94
12. चतुर्वेदी, डॉ क्रांति, मध्य प्रदेश में जल संरक्षण की परंपरा
13. त्रिपाठी, डॉ काशीप्रसाद, बुंदेलखंड के तालाबों एवम् जल प्रबंधन का इतिहास, समय प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2011, पृ॰ 78
14. पन्ना लैंडबैंक, पूर्व उद्धत
15. व्यक्तिगत सर्वेक्षण पर आधारित
16. डिस्ट्रिक्ट ग्राउंड वाटर इनफार्मेशन बुकलेट–पन्ना डिस्ट्रिक्ट, सेंट्रल ग्राउंड वाटर बोर्ड,नार्थ–सेंट्रल रीजन, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, 2013